सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज
दिनांक 10 जनवरी 2016, फरीदाबाद, सै0–10

! राधा–स्वामी.!
मन को चंडाल भी कहा गया है, मन को बंदर भी कहा गया है। मन की सबसे तेज गति है, मैं अभी यहाँ पर मन से हूँ और अभी 1 सैकिंण्ड में कनाडा पहुँच गया। 16000 कि.मी. की दूरी तय की मेरे मन ने 1 सैकिंण्ड से भी कम समय में, और कनाडा क्या है, मैं चाँद पर भी जा सकता हूँ। अब इस मन को नियंत्रण करना क्या आसान काम है? ये बच्चों का खेल नही है, इस मन को जो दुनिया का सबसे Fastest Moving है। और कभी एक जगह टिकता नही है, कभी ऊँचाई पर पहुँचा देगा हमको, और कभी एकदम नीचे गिरा देगा। कभी–कभी मन में बुरे विचार आ जाएँगे। ये सारा मन का ही काम है, आप क्या समझते हो कि मन कोई मामूली चीज है। बहुत शक्तिशाली है ये मन। क्यों? क्योंकि हमारा मन उस मालिक के मन का अंश है। और उसके मन में कितनी शक्ति है? उसके मन में इतनी शक्ति है कि उसने एक कल्पना की, एको हम् वहुस्यामि! मैं एक से अनेक हो जाऊँ, बस इतनी ही कल्पना की उसने और ये सारा अम्बार खडा कर दिया, अरबों–खरबों चाँद–सितारे। वैज्ञानिकों ने एक और खोज कर ली, वो कहते हैं हमारा जो Universe है, इसके Parellel एक और Universe है, इस Galaxy को एक आकाश गंगा कहते हैं और इस आकाश गंगा में अरबो खरबों चाँद सितारे हैं, और ऐसी अनगिनत आकाश गंगाएँ हैं, इसको बोलते हैं कायनात। ये कायनात कैसे बन गई? मालिक के संकल्प से बन गई, ना जाने मालिक के मन में क्या आ गई? उसने संकल्प किया मैं एक से अनेक हो जाऊँ, क्या उसके मन में आ गई किसी को नही मालूम, लेंकिन हो गया, और हम आ गए। जब हम आ गए तो हमारा मन भी उस मालिक के मन का एक अंश है। तो फिर हमारे मन में भी उतनी शक्ति होनी चाहिए जितनी शक्ति उस मालिक के मन में है। जब शेर का बच्चा शेर बन जाता है, तो शेर के बच्चे में शेर की सारी ताकत आ जाती है। इसी तरह से उसके मन में जो ताकत है, वो ही ताकत हमारे मन में भी है। उसका मन बहुत बडा है और हमारा मन छोटा है, लेकिन ये मत समझना साईज कम होने से ताकत कम हो गई। ताकत कम नही हुई, जितनी ताकत उस मालिक के मन में है, उतनी ही ताकत हमारे मन में भी है। हम भी अपने मन से एक और कायनात खडी कर सकते हैं। अगर मैं अभी सोचूं, एको हम वहुस्यामि। मैं भी एक से अनेक होकर एक और कायनात खडी कर सकता हूँ, इतनी ताकत है मेरे मन में। मेरे ही मन में नही, आप सबके मन में इतनी ताकत है। अब जरा साचो हमारे मन में कितनी शक्ति है, आप कल्पना नही कर सकते हो। लेकिन हम सब अपने मन की शक्ति को भूल गए हैं। हमारे मन में कितनी शक्ति है, इसका हमें अंदाजा ही नही है। जब हम संसार में आ गए, तो संसार की चमक–दमक में फँस गए। सबकुछ भूल गए, अपने मन को भूल गए, अपनी आत्मा को भूल गए, अपनी सुरत को भूल गए और संसार की चमक–दमक में फँस गए। अब हमको इतना ही पता है, ये मेरी बेटी है, इसकी शादी करनी है, पैसा कहाँ से लाऊँ? इसी चक्कर में हैं हम। हमारे मन में क्या शक्ति है, भूल गए हम। अभी उन्होने मानवदयाल जी महाराज का एक किस्सा बताया, वो कैसे बताया उन्होने? वो भी हमारे जैसे हैं, लेकिन उन्होने अपने मन की शक्ति को Discover किया है। हमारे मन की शक्ति इस संसार की Mud से ढक गई है। कौन सी Mud ? संसार की Mud, संसार की Mud क्या है? काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, राग, द्वेष, नफरत, ईर्ष्या, यही संसार है। और यही संसार है कीचड़, और इसी कीचड की तह हमारे मन के ऊपर जम गई है। इसलिए हमारा तो वो कुछ भी चमत्कार कर सकता है। ये चमत्कार आप सब भी कर सकते हैं। अपने मन की शक्ति को Un Cover करो, फिर Discover करो, फिर आप भी चमत्कार कर सकते हो। फिर आपको कोई जरूरत ही नही है किसी

संत या गुरू के पास जाने की, क्योकि जो कुछ करना है, वो आप खुद ही कर सकते हैं। अपने लिए ही नही, दूसरों के लिए भी कर सकते हैं।

जब हम रत्ना पंण्डित के घर गए थे, तों उनकी पोती मेरे पास आ गई और कहने लगी, मैं आपसे कुछ पूछना चाहती हूँ? मैंने कहा पूछो, वो कहने लगी, मेरी दादी कहती थीं कि मैं अपना भाग्य बदल सकती हूँ। क्या मैं अपना भाग्य बदल सकती हूँ? मैने कहा– हाँ तुम अपना भाग्य बदल सकती हो, सारे संसार का भाग्य बदल सकती हो। लेंकिन एक बात है, जब तुम उस अवस्था पर पहुँचोगे जब तुम अपना भाग्य बदल सकते हो, तुम अपना भविष्य बदलोगे नही, ना अपना बदलोगे, ना किसी और का बदलोगे। क्यों? क्योंकि तब तक तुमको ज्ञान आ जाएगा कि सबको अपने–अपने कर्मों को भुगतना चाहिए। अपने कर्मों से किसी को बचना नही चाहिए। अपने कर्मों का हँसी–खुशी भुगतान करते रहो, उसी में हमारी भलाई है। अगर मैं किसी का भविष्य बदल देता हूँ, इसका मतलब क्या हुआ? मैं प्रकृति के खिलाफ जा रहा हूँ और प्रकृति के साथ खिलवाड कर रहा हूँ, तो मुझे भगुतना पडेगा।

ईरान के एक बहुत बडे संत थे। उनका नाम था समस तवरेज। एक औरत आई उनके पास, उस औरत का बच्चा मर गया था। वो औरत उस संत को कहने लगी, तू खुदा का बंदा है, मेरे बच्चे को जिंदा कर। वो संत कहने लगा माई मैं तेरे बच्चे को जिंदा नही कर सकता हूँ। वो औरत जिद पकड गई, तू खुदा का बंदा है मेरे बच्चे को जिंदा कर। वो संत था, उसका दिल पिघल गया, संत का ह्रदय कोमल होता है। संत ने कहा मैं कोशिश करता हूँ। तो संत ने उस मरे हुए बच्चे से कहा खुदा के हुक्म से जिंदा हो जा। बच्चा जिंदा नही हुआ। फिर से उसने कहा खुदा के हुक्म सें जिंदा हो जा। बच्चा जिंदा नही हुआ। तीसरी बार उसने कहा मेरे हुक्म से जिंदा हो जा, बच्चा जिंदा हो गया। इससे दो बातें साबित हो जाती हैं। पहली बात गुरू और गोविंद दो नही हैं, वही गुरू है वही गोविंद है। हम संतों को गलत समझते हैं, वहीं पर हम मार खा रहे हैं। संतो को कभी मनुष्य मत समझो। संत होता है, उसी कार अवतार, मालिक होता है। तभी तो समस तवरेज ने मन बेकार हो गया है। हमारा मन काम ही नही करता है। लेकिन एक संत जो होता है, उसने अपने मन को Un Cover किया है और फिर क्पेबवअमत किया है। पहले उसने अपने मन से संसार की डनक हटा दी, फिर उसने अपने मन को Discover किया। अरे मेरे मन में इतनी शक्ति है, मैं कुछ भी कर सकता हूँ। परमदयाल जी महाराज कहते थे– मैं अगर चाहूँ तो सारे संसार को 1 सैकिण्ड में पलट सकता हूँ। इसका मतलब क्या हुआ? एक और कायनात खडी कर सकते हैं वो। जैसे मालिक ने अपने संकल्प से ये कायनात खडी की, परमदयाल जी महाराज कहते थे मैं भी एक और कायनात खडी कर सकता हूँ, इतनी शक्ति है मेरे मन में। जब संत अपने मन की शक्ति को न्द बवअमत करके Descover करता है, जब बच्चे को कहा खुदा के हुक्म से जिंदा हों जा, बच्चा जिंदा नही हुआ। क्योंकि खुदा कोई है ही नही।

नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे।

जब उसका कोई रूप ही नही है, हम सब उसी के रूप हैं। जब समस तवरेज ने कहा मेरे हुक्म से जिंदा हो जा, बच्चा जिंदा हो गया। फिर समस तवरेज कौन था? वो वही गोविंद था, वो ही गुरू था।

कृष्ण अर्जुन का गुरू था, कृष्ण ने अर्जुन को गीता का पाठ पढाया, लेकिन अर्जुन की खौपडी में बात नही गई। अर्जुन बोला नही जी, मैं युद्ध नही करूंगा। तब कृष्ण ने क्या किया? गुरू से वो गोविंद बन गया, और अपना विराट स्वरूप दिखाया। देख गुरू और गोविंद दो नही हैं, एक ही हैं, और अपना मुँह खोलकर दिखाया उसको, सारी कौरव सेना मरी पडी है। मैं तुमको यश देना चाहता हूँ, क्योंकि तुम मेरे प्रिय चेले हो। तब अर्जुन कहता है नष्टो मोहः, मेरा मोह नष्ट हो गया। वो धनुष उठाता है और सबको मार देता है। तो इससे क्या साबित हुआ? गुरू और गोविंद दो नही हैं। वही

गुरू है, वही गोविंद है। अब समसम तवरेज ने क्या किया? समस तवरेज ने गोविंद का रूप प्रकट किया और बच्चे को जिंदा किया। लेकिन उसने प्रकृति के खिलाफ खिलवाड किया, बच्चे की मृत्यु थी, और उसने बच्चे को जिंदा किया। जब उसने प्रकृति के साथ खिलवाड किया तो उसको उबलते हुए तेल की कडाही में डाल दिया गया, क्योंकि ये प्रकृति के खिलाफ जाने का परिणाम था। तो जब रत्ना पंण्डित की पोती मेरे पास आई और कहने लगी क्या मैं अपना भविष्य बदल सकती हूँ? मैंने कहा बदल सकते हो, लेकिन जब तुम उस अवस्था पर पहुँचोगे, तो ना अपना भविष्य बदलोगे, ना दूसरों का भविष्य बदलोगे। क्यों? क्योंकि तब तक तुमको ज्ञान हो जाएगा कि सबको अपने–2 कर्मों को खुशी–खुशी भुगतना चाहिए, इसी में सबका भला है। जो अपने कर्मों से भागने की कोशिश करेगा, कर्म उसका पीछा करेंग और यहाँ नही तो वहाँ पकडेंगे, और भी जोर से पकडेगें। पुलिस एक चोर को पकड लेती है, और जज के सामने खडा करती है, जज कहता है तुम्हारी 5 साल की सजा है। अब वो 4 साल के बाद जेल से भाग जाता है। पुलिस उसको फिर से पकड लेती है, और फिर से जज के सामने खडा करती है, जज कहता है अच्छा तुमको 5 साल की स जा थी और तुम 4 साल में भाग गए। अब तुम्हारी सजा 10 साल है। यही हमारे साथ भी होता है। अगर हम अपने कर्मों से बचना चाहते हैं, कर्मों से कोई नही बच सकता है। उल्टा उसका असर हमारे ऊपर होता है, और दुगनी सजा हो जाती है। मैं आपको फरीदाबाद की एक सच्ची घटना बताता हूँ। पहले हम 1 नं. फरीदाबाद में रहते थे। वहाँ एक ब्वनचसम रहता था, उनके कोई बच्चा नही था। वो डाक्टरों के पास गए, सब डाक्टरों ने बोल दिया कि तुम्हारे बच्चा नही हो सकता है। पता नही कैसे वो एक तांत्रिक के पास पहुँच गए। तांत्रिक ने उनको एक बेटा दे दिया। अब वो बच्चे से लाड प्यार करने लगे, लाड प्यार बढता गया। अब उस बच्चे के अंदर सारे अवगुण आने लग गए और उसकी सोहबत भी बुरे बच्चों के साथ हो गई। शराब पीने लग गया और जुआ भी खेलने लग गया। अब वो रोज माँ बाप से पैसा माँगे, शुरू में तो वो खुशी–2 से पैसा देते थे, लेकिन बाद में पैसा रोकने लग गए। फिर क्या हुआ? बेटा उनको पीटने लग गया। और एक दिन वो शराब पीकर आ गया और दोनो माँ–बाप को मार दिया। ये क्या था? ये था प्रकृति के साथ खिलवाड करने की सजा। जब उनके भाग्य में बच्चा नही था, तो फिर वो क्यों तांत्रिक के पास गए और बच्चा ले आए। जब बच्चा नही है तो मालिक की मौज में रहो। जो दिया मालिक ने उसमें उसका शुकराना अदा करो। कभी भी प्रकृति के साथ खिलवाड मत करो, कभी अपने कर्मों से बचने की कोशिश मत करो। अगर तुम अपने कर्मों से भागने की कोशिश करोगे, तो तुम्हारे कर्म जब तुमको पकडेंगे, बुरी तरह पकडेंगे। और उस टाईम हम पछतायेंगे। ये क्या किया हमने? ऐसी गलती क्यों की हमने? परमदयाल जी महाराज जब कहते थे कि मैं चाहूँ तो सारी दुनिया को 1 सैकिंड में पलट सकता हूँ, लेकिन बाद में कहते थे, मैं क्यों पलटू? मैं प्रकृति के साथ क्यों खिलवाड करूँ? सबको अपने–अपने कर्म भुगतने दो, उसी में सबका भला है। क्यों? हम यहाँ आए किसलिए हैं? हम यहाँ आए हैं अपने कर्मों की टोकरी को खाली करने के लिए, हमारा जन्म इसलिए हुआ हमारे कुछ कर्म बाकी रह गए और उनको भुगतना है, इसलिए हमारा जन्म हुआ। अगर हमारे पास कोई कर्म नही होता, तो हमारे पास कोई जन्म भी नही होता। क्यों? जब हमारे पास कोई कर्म ही नही है, तो हमारा जन्म क्यों होगा? फिर हम क्या भुगतने के लिए आएंगे इस संसार में, जब कोई कर्म ही नही है। तो हम संसार में आए हैं कर्मों की टोकरी को खाली करने के लिए, और यही हमारा लक्ष्य है। जिस दिन हमारे कर्मों की टोकरी खाली हो गई, उसी टाईम हम धुरपद धाम पहुँच जाएंगे, फिर वापिस नही आना इस संसार में। धुरपद धाम हमारा लक्ष्य है, धुरपद धाम में शांती, अनंत सुख, परम आनंद है, क्योंकि वहाँ पेट का झंझट नही है।

बात चली थी मन की, हमारे मन में इतनी शक्ति है कि हम एक दूसरी कायनात खडी कर सकते हैं। संत और हम में क्या फर्क है? संत और हम में इतना ही फर्क है कि हम अपने मन की शक्ति के बारे में कुछ जानते ही नही हैं। और संत ने अपने मन की शक्ति को Un Cover किया है,

Discover किया है, और उस शक्ति से वो चमत्कार भी कर सकते हैं। एक संत अपने आपको Expose नही कर सकता है। परमदयाल जी महाराज कहते थे अगर मैं लोगों को बताऊँ, मैं क्या हूँ? तो लोग मेरा एक बाल भी नही छोडेंगे। तो आप लोग अपने आपको कमजोर, गरीब, लाचार मत समझो, ऐसा नही है। आप सब कुछ कर सकते हो। गुरू किसलिए आता है संसार में? गुरू आता है तुम सबको जगाने के लिए, तुम सब सो रहे हो, तुम नींद में हो। तुमको पता ही नही तुम कौन हो? अंग्रेजी में कहते हैं– Self Realization is god realization, यानि तुमको पता करना है God कहाँ है? पहले अपने आपको खोजो, तुम कौन हो? फि र तुमको भगवान को ढूँढने की कोई जरूरत ही नही पडेगी, भगवान मिल गया तुमको। जब तुमको पता लग गया, मैं कौन हूँ? फिर तुमको भगवान मिल गया। You are God, तुम कहते हो, हे–भगवान मुझको दर्शन दे दो। कौनसा भगवान दर्शन देगा तुमको? जब उसका कोई रूप है ही नही।

नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे।

जब भगवान का कोई रूप ही नही है, तो भगवान आपको क्या दर्शन देगा? लेकिन भगवान दर्शन देगा, किस रूप में, आप हैरान हो जाओगे, भगवान का दर्शन है मन की शांती। जब तुम्हारे मन में शांती आती है, तो भगवान ने तुम्हे दर्शन दे दिए। क्यों? मन की शांती आना कोई आसान काम नही है।

लाखो मध्य मत गिनो, कोटिन में काऊ एक।

लाखों में नही करोडों में किसी एक को मन की शांती आती है। मन की शांती जब आती है तो क्या हो जाता है? सबसे पहले हमारी सारी इच्छाएँ खत्म हो जाती हैं। हम दुखी इसलिए हैं क्योंकि हमारी इच्छाएँ खत्म नही होती। और जब हमारी इच्छाएँ खत्म हो गई, हम सुखी हो जाते हैं। संत सुखी क्यों है? संत सुखी इसलिए है, क्योंकि उसकी कोई इच्छा ही नही होती है। जब हमारे मन में शांती आ जाती है, सबसे पहले यही हो जाता है, हमारी सारी इच्छाएँ खत्म हो जाती हैं। We became Desire less, और फिर क्या हो जाता है हमारे साथ? we became diteched with this Worls. हम इस संसार से ऊपर उठते हैं। संसार से ऊपर उठने का मतलब है, हम संसार को समझ पाते हैं कि संसार क्या है। ये संसार एक कीचड़ है, इस संसार को हम नीचे रहने देते हैं, और हम ऊपर उठते हैं। जब हम संसार की कीचड से ऊपर उठ गए, तो We diteched with this world, God की Definition क्या है? संत God का ही रूप है। संत की Definition है– पहले उसको कोई इच्छा नही होती है, दूसरा वो संसार से ऊपर उठता है। उसका कोई Relation नही है, सबसे प्रेम करता है। सारे बच्चे मेरे हैं, लेकिन मेरा अपना बच्चा कोई नही है। एकदम ditached with this world, हमारे दुखों का कारण है मोह। ये मेरा बेटा है, ये मेरी बेटी है, ये मेरी बीबी है, ये मेरा पति है, इनके साथ Attachment हो जाती है हमारी। ये नही कि हमें अपने बच्चों को उठा के फेंक देना है। हमारे बच्चे क्यों आए हैं? ये हमारे प्रारब्ध कर्म हैं। मैंने कहा था कि प्रारब्ध कर्म से कोई भागना नही। ये हमारे बच्चे जो हैं हमारे प्रारब्ध कर्म हैं। पिछले जन्म का कोई लेन–देन है, इसलिए इस जन्म में हमारे बेटा–बेटी बनकर आ गए। तो जब ये कर्म है हमारा, कर्म तो भुगतना ही पडेगा। बच्चों के साथ जो भी लेन–देन है हमारा, वो पूरा करना ही पडेगा। उनको पढाना, लिखाना, उनकी शादियाँ करनी, उनके घर बसाना, सब कुछ करना पडेगा, क्योंकि वो हमारे कर्म हैं। अगर हमने उनसे बचने की कोशिश की, तो वो हमारा पीछा नही छोडेंगे, यहाँ नही तो, वहाँ पकड लेंगे। इसलिए जो भी हमारे लेन–देन के रिश्ते हैं, वो हमें पूरे करने ही पडेगें।

मैं कह रहा था कि मन की शांती। एक संत और हम में क्या फर्क है? संत का मन हमेशा शांत रहता है, क्यों? क्योंकि उसकी कोई इच्छा नही रहती है। शुबह खाना मिला ठीक है, शाम को खाना मिला या नही मिला, कोई चिंता नही। संत को शाम के खाने की भी कोई इच्छा नही होती है। जब हम कहते हैं, हे भगवान मुझको दर्शन दे दो, ये भी एक इच्छा है, और जो इस इच्छा में फँस गया,

वो फँस गया। क्योंकि कोई भगवान तुमको दर्शन देने वाला नही है। जब उसका कोई रूप है ही नही, फिर किस रूप में तुमको दर्शन देगा? अगर कोई दर्शन होता है, तो समझो वो काल है, और तुम्हारे मन का खेल है। मन का काम है रूप बनाना, और जो भी हम मन में रूप बनाने की कोशिश करेंगे, वो ही रूप आ जाएगा हमारे सामने, और वो धोखा है, वो काल है, कयोंकि मालिक का कोई रूप ही नही है। God का रूप है– Super Conceusness और वो Macro है, और हम Micro हैं। कहते हैं– God has Made Man his own Image, भगवान ने मनुष्य को अपने ही रूप मे बनाया है। लेंकिन ये समझने की बात है, सबसे पहले आपको ये समझना होगा कि God का क्या रूप है? फिर आपको समझना होगा कि मेरा क्या रूप है? फिर आपको समझ में आएगा कि भगवान ने मनुष्य को अपने रूप में कैसे बनाया? ये सारी कायनात अरबों–खरबों चाँद–सूरज, आकाश, धरती, ये सब मालिक का स्थूल शरीर है, जो पाँच तत्व का बना है, और हमारा भी स्थूल शरी है, और ये भी पाँच तत्व का बना है। अब दूसरी चीज है– एक अनंत सागर है मन का, जिसे अव्याकृत बोलते हैं, और उसी मन का अंश हमारा भी मन है। अब तीसरी चीज है– एक अनंत सागर है आत्मा का, और उसी का अंश एक हमारी भी आत्मा है। अब शरीर, मन और आत्मा को मिलाकर मनुष्य बन गया, और मालिक भी ये सारी कायनात उसका शरीर है, फिर मन का अनंत सागर, और उसके ऊपर आत्मा का अनंत सागर। तो इसी को बोलते हैं– God has made man own his image, भगवान के पास स्थूल शरीर, मन और आत्मा है, और हमारे पास भी स्थूल शरीर, मन और आत्मा है। तो फिर हम में और भगवान में क्या फर्क है? हम ही वही हैं, और कोई नही है। जिसको आप ढूँढते हो, हे–भगवान मुझको दर्शन दो, वो और कोई नही है, वो हम ही हैं। फर्क बस इतना है, वो बडे साईज में है, हम छोटे साईज में हैं, लेकिन Qualities Same हैं। हमारे मन में भी उतनी ही शक्ति है, जितनी God के मन में है। हम भी एक और कायनात खडी कर सकते हैं। तो फिर हम क्या हैं? हम वही हैं, जिसको हम ढूँढ रहे हैं, वो हम ही हैं।

Self Realization is God Realization

जब हम अंदर अपने आपको खोजने लगते हैं, तो खोजते–2 एक अवस्था ऐसी आ जाती है, जब हम कहते हैं अरे जिसको मैं ढूँढ रहा था, वो तो मैं ही हूँ। कबीर साहब कहते हैं–

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं ही हो गई लाल।।

एक नमक की डली जब समुद्र की तह ढूँढने जाती है, तो जाते–2 तह तक पहुँचती नही है, रास्ते में ही सागर बन जाती है। इसी तरह जब हम भी खोजने निकलते हैं, खोजते–2 हम भी वही सागर बन जाते हैं। We became God.

मन की शांती क्या है? मन की शांती है God, अगर तुम्हारे अन्दर मन की शांती आती है, you are God, क्यों? तुम्हारे अंदर God की सारी Qualities आ जाती हैं। सबसे पहले Qualities है, You Became Desire less, सारी इच्छाएँ खत्म। दूसरी Qualities है, संसार के साथ मोह खत्म हो जाता है। आपको लगता है संसार के सारे बच्चे मेरे ही बच्चे हैं, क्योंकि मोह खत्म हो गया। उस Super Conceus ness का रूप यही है, वो Desire less है, और उसको कोई मोह नही है, और जब वो Qualities हम में आ गई, We are God, हम ही खुदा हैं, और कोई नही है, पहचानो अपने आपको, तुम ही खुदा हो।

!! राधा स्वामी !!